संत श्रीसोपानदेव

पंढरीमाहात्म्य

१

उघडली दृष्टी इंद्रिया सकट। वैकुंठची वाट पंढरी जाणा।१।
दृष्टीभरी पाहे विट्ठल दैवत। पूर्ण मनोरथ विट्ठलदेवे।२।
हाची मार्ग सोपा जनासी उघड। विषयाचें जाड टाकी परतें।३।
सोपान म्हणे गुंफसी संर्वथा। मग नव्हे उलथा भक्तिपंथें।४।

२

चलारे वैष्णवहो जाऊं पंढरीयेसी। प्रेमामृत खुण मागों त्या विट्ठलासी।१।
चालिले गोपाळ वाहताती वांकुलिया। भरले प्रेमरसे मग ते वाताती टाळिया।२।
दिंड्या गरुडटके मृदंगाचे नाद। गाताती विट्ठलनाम करिताती आल्हाद।३।
पावले पंढरी भीमा देखीयेली दृष्टी। वैष्णवांचा गजरु आनंदें हेलावली सृष्टी।४।
गजरु गोपाळांचा श्रवणीं पडियेला। शंखचक्र करीं विट्ठल सामोरा आला।५।
कांसवदृष्टी न्याहाळीतु रंगी नाचतु पै उगला। सोपान म्हणे आम्हीं वाळुवंटीं केला काला।६।

३

आणीक ऐकेगा दुता। जेथें रामनाम कथा।
तेथें करद्वय जोडूनी हनुमंता। सदासन्मुख असिजे।१।
रामनामीं चाले घोषु। तो धन्य देशु धन्य दिवसु।
प्रेम कळा महा उल्हासु। जगन्निवासु विनवितुसे।२।
दिंड्या पताका मृदंग। टाळ घोळ नामें सुरंग।
तेथें आपण पांडुरंग भक्तसंगें नाचत।३।
तया भक्ता तिष्ठती मुक्ती। पुरुषार्थ तरी नामें कीर्ति।
रामनामीं तया तृप्ती। ऐसें त्रिजगती यमु सांगतु।४।
ज्या नामें शंकर निवाला। गणिका अजामेळ पद पावला।
अहिल्येचा शाप दग्ध झाला। तोची पान्हा दिधला पांडुरंगें।५।
चित्रगुप्त म्हणती यमा। काय करावें गा धर्मा।
लोक रतले रामनामा। पुरुषोत्तमा विट्ठलदेवा।६।
कळिकाळासी दाटुगें नाम। रुद्रें धरिलें महा प्रेम।
त्रिभुवनीं विस्तारिलें सप्रेम। रामनाम उच्चारी यम तोही तरला जाणा।७।
ऐसें नाम अगाध बीज। उच्चारी तो होय चतुर्भुज।
सोपान म्हणे हे गुज। उमाशंकर देवाचें।८।

४

सर्वकाळ ध्यान हरिरूप ज्याचें। तया सर्व रूप साचे जवळी असे।१।
हरि हरि जाला प्रपंच अबोला। हरिसुख निवाला तोचि धन्य।२।
हरि हेंचि मन संपन्न अखंड। नित्यता ब्रह्मांड त्याचे देहीं।३।
सोपान विदेही सर्वरूपीं बिंबतु। हरिरूपीं रतु जीव शिव।४।

५

मनाचे मवाळ हरिरूप चिंतिती। रामकृष्ण मूर्ति नित्य कथा।१।
रामकृष्ण ध्यान सदा पैं सर्वदा। न पवेल आपदा नाना योनी।२।
हरि ध्यान जप मुक्त पैं अनंत। जीव शिवीं रत सर्वकाळ।३।
सोपान प्रेमा आनंद हरीचा। तुटला मोहाचा मोहपाश।४।

६

आवडीचें मागें प्रवृत्तीचें नेघें। नाममार्गें वळगें निघे रया।१।
नाम परब्रह्म नाम परब्रह्म। नित्य रामनाम जपीजेसु।२।
अंतरींच्या सुखें बाहिरिलिया वेखें। परब्रह्म सुखें जपतुसें।३।
सोपान निवांत रामनाम मुखांत। नेणें दुजी मात हरिविण।४।

७

सबाह्य कोंदलें निवांत उगलें। रामरसें रंगलें अरे जना।१।
हरि रामकृष्ण हरि रामकृष्ण। दिननिशीं प्रश्न मुखें करा।२।
तरा पैं संसार रामनामें निरंतर। अखंड जिव्हार रामरसा।३।
सोपान जपतु रामनामीं रतु। नित्यता स्मरतु रामकृष्ण।४।

८

अव्यक्ताच्या घरीं प्रकृति कामारी। निघे माजि घरीं दडोनियां।१।
तैसें नका करूं प्रगट सर्वेश्वरु। हरिनाम उच्चारु जपा वाचे।२।
विज्ञानीं पैं ज्ञान आटलेंसे संपूर्ण। उभयतां चैतन्य तैसा हरि।३।
सोपान निवांत रामनामीं रत। संसार उचित रामनामें।४।

९

मोक्षालागीं धन वेंचावें नलगे। रामकृष्ण वोळगे जपीजेसु।१।
रामकृष्ण मुखें तया अनंत सुखें। तो जाय विशेषें वैकुंठभुवनीं।२।
वेगाचेनि वेगें जपा लागवेगें। प्रपंच वाउगे हरिनामें।३।
सोपान संचित रामनामामृत। नित्यता सेवित हरिकथा।४।

१०

ज्याचे मुखीं हरि तोचि धन्य ये जगीं। तरला पैं वेगीं वेदु बोले।१।
हरि हाचि आत्मा तत्त्व पैं सोहपें। हरितील पापें हरिनामें।२।
वैकुंठीचें सुख नलगे पैं चित्तीं। हरि हेचि मूर्ति विट्ठल ध्यावो।३।
याचेनि स्मरणें कैवल्य साचार। सोपान विचार हरि जपे।४।

११

हरिनाम जपे सहस्रवरी सोपें। जातीलरे पापें अनंतकोटी।१।
हरिविण नाम नाहींपारे सार। दुसरा विचार करूं नको।२।
हरि ध्यान चोख पवित्र परिकर। नित्यता शंकर हरिध्यानीं।३।
सोपान म्हणे हरि जप करारे सर्वथा। न पावाल व्यथा भवजाळीं।४।

१२

कृष्णाचिया पंथें चालिलो दातारा। तंव मार्ग येसरा तुजमाजीं।१।

आदि ब्रह्ममूर्ति तूंचि विष्णु स्थिती। तुज कैवल्यपति मोल नाहीं।२।
अमोल्य जे वस्तु पुंडलिक देवा। जगाचा विसावा जनकु माझा।३।
सोपान म्हणे सांकडे तुजचि सर्व कोडें। विनवितु मी वाडें चरणापाशीं।४।

१३

राम कृष्ण मूर्ति या पुजीतसे भावें। सर्व तुवां व्हावे केशीराजा।१।
रामकृष्ण म्हणे नित्य काळ सदा। नेणें दुजा धंदा तुजवीण।२।
माहेर आठवे करितां कामना। तुझ्या चरणीं वासना जडोनि ठेली।३।
सोपान म्हणे सरतें तुजचि आवडतें। माझ्या मनोरथें तूंची आशा।४।

१४

मी नेणें ती भक्ति नेणें त्या मुक्ति। तुझ्या मार्गपंथीं मार्गु मना।१।
हेंची मज चाड न करि मी आशा। तुज हृषीकेशा चिंतितुसें।२।
तूंची माझें धन जोडी हे निजाची। जननी तूं आमुची जीवलगे।
सोपान म्हणे तुजविण न कळें। तुजमाजी सोहळें मनें केलें।४।

१५

सर्वघटीं रूप समसारिखें आहे। म्हणोनियां ते सोय आम्हां भक्तां।१।
निर्गुणीं सगुण गुणांमाजी गुण। जन तूं संपूर्ण दिससी आम्हां।२।
तेंची रूप रूपस दाविशी प्रकाश। पंढरीनिवास होऊनी ठासी।३।
सोपान सलगी न बोलतां उगा। तुजविण वाउगा ठाव नाहीं।४।

१६

सागरींचे तोय जगा निवारीत। मागुतें भरीत पूर्णपणें।१।
तैसे आम्ही दास तुज माजी उदास। तूं आमुचा निवास सर्व देवा।२।
तुजमाजी विरों सुखदुःख विसरों। तुझ्या नामें तरों येची जन्मीं।३।
सोपान निकट बोलोनी सरळ। तुष्टला गोपाळ अभय देत।४।

१७

हरिसुखवेषें नाचोत सर्वदा। गोविंद परमानंदा हरिबोधें।१।
रामकृष्ण नामीं या नामीं आनंदु। नित्यनित्य गोविंदु आम्हां घरीं।२।
निर्गुण नेणे सगुणआचार। सगुण विचार सर्वकाळ।३।
सोपान पादप अवघेंचि हरिरूप। हरिविण स्वरूप नेघे चित्तीं।४।

१८

गोपाळ अच्युत हा नाममहिमा। नित्यता पूर्णिमा आम्हां देहीं।१।
रामकृष्ण नाम हा जप परम। ऐसा नित्य नेम सारूं रया।२।
वासना वोढाळ नेघों पैं बरळ। नित्यता अढळ गोपाळ सेवूं।३।
सोपान सार जपतुसे नाम। दिननिशीं नेम हृदयांत।४।

१९

गोविंद माधव हा जपु आमुचा। नाहीं प्रपंचाचा आम्हा लेशु।१।
गोविंद स्मरणें नित्यता पारणें। हरिनाम पठणें मोक्षमुक्ति।२।
नलगती तीर्थें एक गोविंद पुरें। वेगीं कृष्ण धुरें वोळगों सदा।३।

सोपान सांगत गोविंद स्मरणें। नित्यता पैं ध्याने गोविंद ऐसें।४।

२०

विठ्ठल पैं सार हा जपु आमुचा। आणि त्या शीवाचा नित्यनेमु।१।
गोविंद श्रीहरि हेंचि तो उच्चारी। शिव चराचरीं आत्मारामु।२।
नामेंविण नेणें दुजयाची मातु। गोविंद स्मरतु शिवराणा।३।
सोपान धारणा गोविंद पाठाची। कोटि पैं कुळांची कुळवटी।४।

२१

हरिविण दुजें न देखे चित्त माझें। म्हणोनि सहजें विचरतु।१।
सर्व हरि हरि तो माझा कैवारी। दुजी भरोवरी नेघों आम्हीं।२।
राम हा सकळ सर्व आम्हां आहे। दुजें तें न साहे परब्रह्मीं।३।
सोपान सलगी विनवितो तुम्हां। सर्व हा परमात्मा आम्हां दिसे।४।

२२

हरिविण दुजें नावडे पैं दैवत। जऱ्ही समर्थ बोलें सृष्टि।१।
हरिराम गोविंद नित्य हाचि छंद। हृदयीं आनंद प्रेमबोधु।२।
हरि हेंचि दैवत समर्थ पैं आमुचें। बोलणें वेदांचें बोलती मुनी।३।
सोपान आलगटु नामपाठ वाचें। नित्य विठ्ठलाचे चरण हृदयीं।४।

श्रीनिवृत्तिनाथकृपेनें लाभलेली स्थिति.

२३

नाहीं नाहीं भान न दिसे प्रपंच। रोहिणी आहाच मृगजळ।१।
तुटलासे सांटा वासना चोखाळा। दिननिशीं फळ राम झाला।२।
रामेंविण दुजें नाहीं पैं हो बिजें। बोलतु सहजें वेदु जाणा।३।
निवृत्ति खुणा विज्ञान देवा हरि। सोपान झडकरी झोंबियेला।४।

२४

तुझा तूंचि थोर तुज नाहीं पार। आमुचा आचार विठ्ठलदेव।१।
आपीं सधर सर्व हा श्रीधर। सर्व कुळाचार पांडुरंग।२।
न दिसे दुसरें निर्धारितां खरें। श्रीगुरुविचारें कळलें आम्हां।३।
सोपान म्हणे रखुमादेवीवर। तूंचि आमुचें पर कुळवटीं।४।

२५

मी माझी कल्पना पळाली वासना। जनीं जनार्दना सेवीतुसे।१।
तूं तंव संपन्न आमुचें हो धन। सांगितली खूण निवृत्तीदेवीं।२।
तुजमाजीं प्रेम गेलें सप्रेमें। जप व्रत नेम हारपले।३।
सोपान सगळा न दिसे इहीं डोळा। तूंची बा गोपाळा आत्माराम।४।

२६

आत्मरूप सुख आत्मपणें चोख। निर्गुणींचें चोख सगुणीं जालें।१।
रूप अरूप रूपामाजी सर्व। रूपीं भावाभाव नाठवती।२।

बुडाले सगुण नाहीं मी तूं पण। अंतरींची खूण मावळली।३।
सोपान गुरू तें तें ब्रह्म पुरतें। पुसोनी आरुतें ठाकीयेली।४।

२७

पहाते न नटे मन तिये वाटे। बोलणेंची खुंटे बोलणेंपणें।१।
परतल्या श्रुती पडियेलें मौन। शास्त्र तें संपन्न नेणें तया।२।
गेला तो आचार आवघाची विचार। परे परता पर परब्रह्म।३।
सोपान दयाळ गुरुनामें बळ। आपण निखळ आपरूपें।४।

२८

दिन व्योम तारा ग्रहगण शेखीं। एक हृषीकेशी सर्व आम्हां।१।
ब्रह्मेंविण नाहीं रिता ठावो पाही। निवृत्तीच्या ठायीं बुडी देत।२।
सर्व हे निखळ आत्माराम सर्व। नाहीं देहभाव विकल्पता।३।
सोपान निकट गुरूनामपेठे। नित्यता वैकुंठ जवळी असे।४।

२९

आम्ही नेणों माया नेणों ते काया। ब्रह्म लवलाह्या आम्हां माजी।१।
मीं तूं गेलें ब्रह्मीं मन गेलें पूर्णीं। वासना ते जनी ब्रह्म जाली।२।
जीवशिवभाव आपणची देव। केला अनुभव गुरुमुखें।३।
सोपान ब्रह्म वर्ततसे सम। प्रपंचाचा भ्रम नाहीं नाहीं।४।

३०

दुजेपणीं ठाव द्वैत तें फेडिलें। अद्वैत बिंबलें तेजोमय।१।
तेजाकार दिशा बिंबीं बिंब एक। निवृत्तीनें चोख दाखविलें।२।
निमाली वासना बुडाली भावना। गेली ते कल्पना ठाव नाहीं।३।
सोपान नैश्वर परब्रह्म साचार। सेवितु अपार नाम घोटें।४।

उपदेशपर.

३१

हरि असे देहीं हाचि भावो खरा। वायां तूं सैरा धांवूं नको।१।
धांवतां अवचटें पडसील व्यसनीं। संसारधसणी योनिमाळे।२।
हरिचेनि ध्यान निरंतर करी। बाह्य अभ्यंतरीं एकु राम।३।
सोपान म्हणे राम नांदे सर्वांघटीं। विश्वीं जगजेठी क्षरलासे।४।

३२

हरि नांदे देहीं ऐसा भाव आहे। परतोनि पाहे अरे जना।१।
परतलिया दृष्टि चैतन्याची दृष्टि। नामेंच वैकुंठीं पावे जना।२।
हा बोध श्रीरंगें अर्जुना उपदेशु। सर्व हृषीकेशु सर्वां रूपीं।३।
सोपान धारणा हरि नांदे सर्वत्र। त्याचेंचि चरित्र क्षरलेंसे।४।

३३

हरिविण भावो न धरावा पोटीं। सर्व भावें सृष्टि एका तत्त्वें।१।

तत्त्वता श्रीहरि सर्वां घटीं आहे। उभारोनि बाहे वेद बोले।२।
हरिविण नाहीं जीव शिव पाहीं। शिवाच्या हो देहीं आत्मा हरि।३।
सोपान म्हणे हरीविण नाहीं तत्त्व। हरि हाचि सर्वत्र सर्वीं वसे।४।

३४

शरीर निर्मळ वासना टवाळ। का रे तूं बरळ भक्तिविण।१।
सर्व ब्रह्म हरि नेणसि सोंवळें। एकाचि गोपाळें जन वन।२।
आप पृथ्वी तेज वायो व्योम। पंचभूतीं सम वर्ततसे।३।
सोपान म्हणे गुरूचा उपदेश शुद्ध। तरीच वासना प्रबुद्ध तया नरा।४।

३५

मन आधीं मुंडीं वासनेतें खंडीं। विट्ठल ब्रह्मांडीं एक आहे।१।
मन हें सोंवळें सदा शौच करी। तुज निरंतरीं हरि पावे।२।
विवेक वैराग्य ज्ञानाचें सौभाग्य। सोंवळा आरोग्य हरि देख।३।
सोपान नेणे सलगीचा सोंवळा। त्यानें वेळोवेळां स्मरे हरि।४।

३६

पृथ्वी सोंवळी आकाश सोवंळें। मन हें वोवळें अभक्तांचें।१।
ब्रह्म हें सोंवळें न देखों वोंवळें। असो खेळेमेळें इये जनीं।२।
ब्रह्मांड पंढरी सोंवळी हे खरी। तारिसी निर्धारीं एका नामें।३।
सोपान अखंड सोंवळा प्रचंड। न बोलो वितंड हरिविण।४।

ज्ञानपर.

३७

राम सर्वोत्तम या नामें निखळ। जन हें सफळ दिसताहे।१।
भिन्न नाहीं दुजे सर्व आत्मराज। नाचताती भोज योगीराज।२।
माता पिता देव गृह दारा जन। सर्व जनार्दन सर्वां रूपीं।३।
सोपान खेचर ब्रह्म माजिवडे। ब्रह्मांडा एवढे आत्माराम।४।

३८

काढलें कुटाळ वासना बळ। सर्व हा गोपाळ भरियेला।१।
गेला पैं परतें शरीर हें रितें। नाशिवंत भुतें दुरी केलीं।२।
स्थावर जंगम स्थावरिला राम। सर्वगत शाम निःसंदेहे।३।
सोपान विनटे परब्रह्म घोटे। प्रपंच सपाट निवटियेला।४।

३९

हरी असे देहीं सर्वकाळ संपन्न। म्हणोनि चिंतन निरंतर।१।
हरिविण नाहीं हरिविण नाहीं। दिशा द्रुम पाहीं बिंबलासे।२।
हरिविण देवो नाहीं अन्य भावो। हरि असे सर्व देहभावीं।३।
सोपान सांगतु हरि सर्वत्र वसे। भाग्यवंता दिसे सर्व काळ।४।

४०

पाहाणें परिसणें नामरूपीं गेलें। निराकारीं ठेले एकतत्त्वेंसी।१।
एकतत्त्वेंसी हरी एक रूप माझा। भिन्नभाव दुजा नाहीं नाहीं।२।
संग परिकर सांपडला आम्हां। सर्व आत्माराम पूर्णपणें।३।
सोपान देव्हडें मन माजिवडें। ब्रह्मांड येवढें गिळीयेलें।४।

४१

नाद रूप ठसा निरालंब जाला। सगुणीं उदेला तेजाकार।१।
तेजरूप तेजीं आपरूप काजी। जीव शिव भोजीं नांदताती।२।
राहातें पाहातें जिवाचे पोखीतें। आपणची उखीतें दिसे एक।३।
सोपानीं नलगे प्रपंची वियोग। ब्रह्मार्पण भोग नुरे तोही।४।

४२

नाद रसीं लीन ब्रह्म सामावलें। त्यामाजि सानुलें ब्रह्म चोख।१।
मन हें निकट ब्रह्मारूपें चोख। ब्रह्मीं ब्रह्म लेख एकपणें।२।
साशंकित गावो जाला परीमाण। घट मठा दिन हारपला।३।
सोपान सोपारें निरालंब निर्धारें। नंदाचें गोजिरें माजि खेळे।४।

४३

नाद ब्रह्म मुसें नादरूप वसे। तैसा जनीं दिसे आत्मपणें।१।
बाहेर साबडा आम्हा दिसे घडा। मातियेचा वेढा जीवनालागी।२।
तैसें हे शरीर आत्मपणें नीट। मन हें निकट चोखाळपणें।३।
सोपान साजिरें ब्रह्म तें गोजिरें। जीवन साकार ब्रह्म हेतु।४।

४४

शांति दया क्षमा तेथील उपाया। निर्गुणीं ते माया आपरूप।१।
ज्योतीरूप छाया सर्व हें निर्गुण। आत्मारामीं भिन्न नाहीं नाहीं।२।
मौन्य परे मिठी पश्यंतीसी नुठी। मध्यमेच्या बेटीं खुंटे तारूं।३।
सोपान वैखरी देहामाजी भारी। पूर्ण तो श्रीहरी बिंबीं बिंब।४।

४५

वैकुंठ सगळें न करूं आगळें। मन ब्रह्ममेळें एक ठेलें।१।
उपमे वैकुंठ ब्रह्म हें तत्त्वबीज। सूचना अखंड सर्वांभूतीं।२।
उदयोस्तु परिमाण ब्रह्म। चंद्र सूर्य नेम हरपलें।३।
सोपान तो क्षत्री जन हेंची क्षेत्र। तेथें तो विचित्र हारपला।४।

४६

ज्ञानदेवीं आन नाहीं ते भिन्न। प्रपंचाचें भरण तेथें नाहीं।१।
स्वरूपाची खूण होऊनी सफळ। भोगी सर्वकाळ चित्सत्ता।२।
आत्मापरमात्मा भेदाभेद द्वंद्व। एकतत्त्व अभेद जनीं वनीं।३।
सोपान दीप दीपीं तें जीवन। तयामाजी जीवन एक झालें।४।

४७

निष्काम निश्चळ निश्चित स्वरूप। तेथें निर्विकल्प मन गेलें।१।

ध्येय गेलें ध्यान ध्याता माजी पूर्ण। आपण सनातन होऊनी ठेला।२।
निर्गुण निरालंब निर्विकार फळ। आपणची सकळ होऊनी ठेला।३।
सोपान जिव्हाळें मनाचें तें आळें। परब्रह्म सांवळें तयामाजी।४।

४८

आपरूप हरी आपणची देव। आपणची भाव सर्व जाला।१।
सर्व हरी हरी बाह्य अभ्यंतरीं। एक चराचरीं आत्माराम।२।
सर्व काळ सम नाहीं तेथें विषम। आपणची राम सर्व ज्योती।३।
सोपान तिष्ठत रामनामीं लीन। मन तेथें मौन्य एकपणें।४।

४९

हरीविण नाहीं वेदांदिका मती। श्रुती त्या संपत्ती जया रूपीं।१।
हरी हाचि सर्व उपनिषद भाव। रोहिणीची माव जनीं दिसे।२।
सर्वघटीं राम जीवशिव सम। सर्वरूपें ब्रह्म भरलें सदां।३।
सोपान निकट परब्रह्म सेवी। सर्व हा गोसावी विठ्ठलराज।४।

———————+++++———————